समाज (Society)

मैकीवर एवं पेज का कथन है कि "समाज रीतियों एवं कार्य-प्रणालियों, अधिसत्ता एवं पारस्परिक सहयोग, अनेक समूहों एवं विभाजनों, मानव व्यवहार के नियन्त्रणों एवं स्वतंत्रताओं की व्यवस्था है। यह सतत परिवर्तनशील जटिल व्यवस्था है, जिसे हम समाज कहते हैं। यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है और यह निरन्तर परिवर्तनशील है। इसका तात्पर्य यह है कि समाज व्यक्तियों का समूह नहीं बल्कि व्यक्तियों के बीच पाया जाने वाला पारस्परिक सम्बन्ध होता है। समाज कोई मूर्त संगठन नहीं है, अर्थात इसको देखा या स्पर्श नहीं किया जा सकता है। यह केवल 'सामाजिक सम्बन्धों का एक जाल है' (Society is the Web of Social relationships)। इस कथन का तात्पर्य यह है कि समाज का निर्माण व्यक्तियों से नहीं होता, बल्कि व्यक्तियों के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों से होता है। जब लोग एक व्यवस्था में बँध जाते हैं तो उस व्यवस्था को हम 'समाज' कहते हैं।

सामाजिक सम्बन्धों से तात्पर्य व्यक्तियों की उन पारस्परिक क्रियाओं से है, जैसे – यदि कोई व्यक्ति अपनी जैविक अथवा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति के साथ कोई क्रिया कर रहा है, तब ऐसी क्रिया के परिणामस्वरूप स्थापित होने वाले सम्बन्ध को हम सामाजिक सम्बन्ध कहेंगे।

सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण

सामाजिक अन्तः क्रिया (Social Interaction) से होता है। सामाजिक अन्तः क्रिया तीन स्तरों पर सम्भव है : (क) व्यक्ति-व्यक्ति के बीच अन्तः क्रिया (Between individuals), (ख) व्यक्ति समूह के बीच अन्तः क्रिया (Between individuals and groups) तथा (ग) समूह-समूह के बीच अन्तःक्रिया (Between groups)। इन तीनों स्तरों पर जिन क्रियाओं का आदान-प्रदान होता है उनके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों का निर्माण होता है, वही समाज कहलाता है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि व्यक्तियों की पारस्परिक अर्थपूर्ण (Meaningful) क्रिया का तात्पर्य यह होता है कि तमाम व्यक्ति किसी उद्देश्य को सामने रखकर, समझ-बूझकर, पूर्णरूप से जागरूक होकर सामाजिक क्रियाओं को सम्पादित करते हैं। अनजाने या संयोगवश दो व्यक्तियों के बीच क्रिया हो जाये, तो उसे सामाजिक क्रिया नहीं कहेंगे। जैसे - यदि राह चलते किसी व्यक्ति और स्कूटर चलानेवाले के बीच टक्कर हो जाती है और दोनों के बीच एक क्रिया-प्रतिक्रिया होती है, तो वह सामाजिक सम्बन्ध नहीं कहा जायगा।